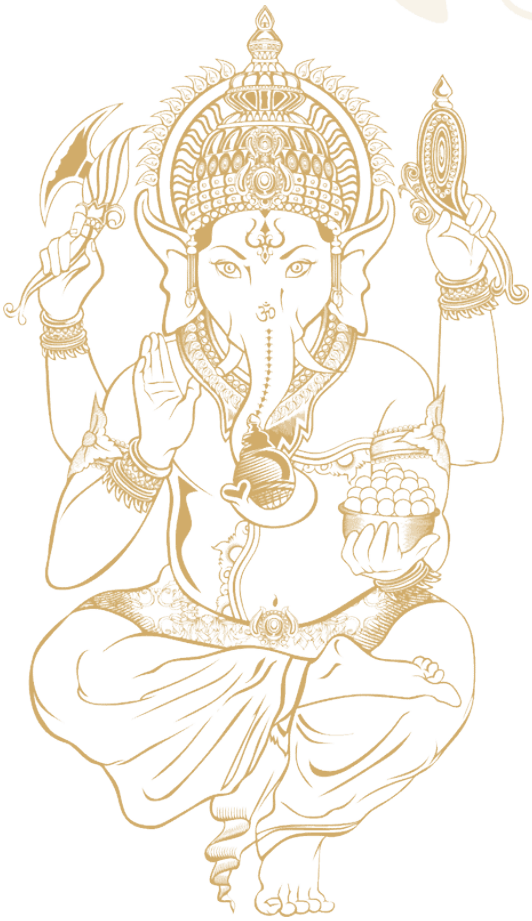

BHEKHLAL KUMAR (SARTHAK)

30 Apr 2024

06:45 AM

Atka Bagodar Giridih

Model: Web-MyKundli

Order No: 120485401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**30/04/2024**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**06:45:00 घंटे**
इष्ट	03:49:48 घटी
स्थान	**Atka Bagodar Giridi**
देश	India

अक्षांश	24:04:00 उत्तर
रेखांश	85:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:13:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	06:58:20 घंटे
वेलान्तर	00:02:48 घंटे
साम्पातिक काल	21:32:15 घंटे
सूर्योदय	05:13:04 घंटे
सूर्यास्त	18:15:01 घंटे
दिनमान	13:01:57 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	15:59:52 मेष
लग्न के अंश	10:44:51 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराषाढ़ा - 1**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	साध्य
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भे-भैरव
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1946	वैशाख	10
पंजाबी	संवत : 2081	वैशाख	18
बंगाली	सन् : 1431	वैशाख	17
तमिल	संवत : 2081	चिथिराई	17
केरल	कोल्लम : 1199	मेदम	17
नेपाली	संवत : 2081	वैशाख	18
चैत्रादि	संवत : 2081	वैशाख	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2081	चैत्र	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 07:05:21
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 28:09:12 घंटे
जन्म योग _____: उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: साध्य
योग समाप्ति काल _____: 22:23:42 घंटे
जन्म योग _____: साध्य
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 07:05:21 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 05:06:51
भभोग _____: 58:37:21
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 5 वर्ष 5 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

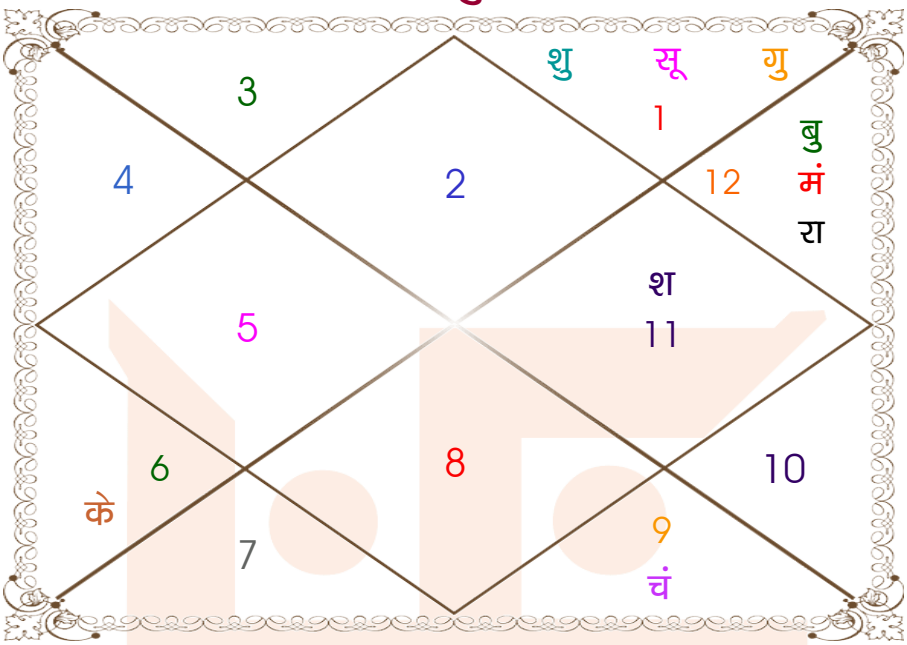

चन्द्र कुंडली

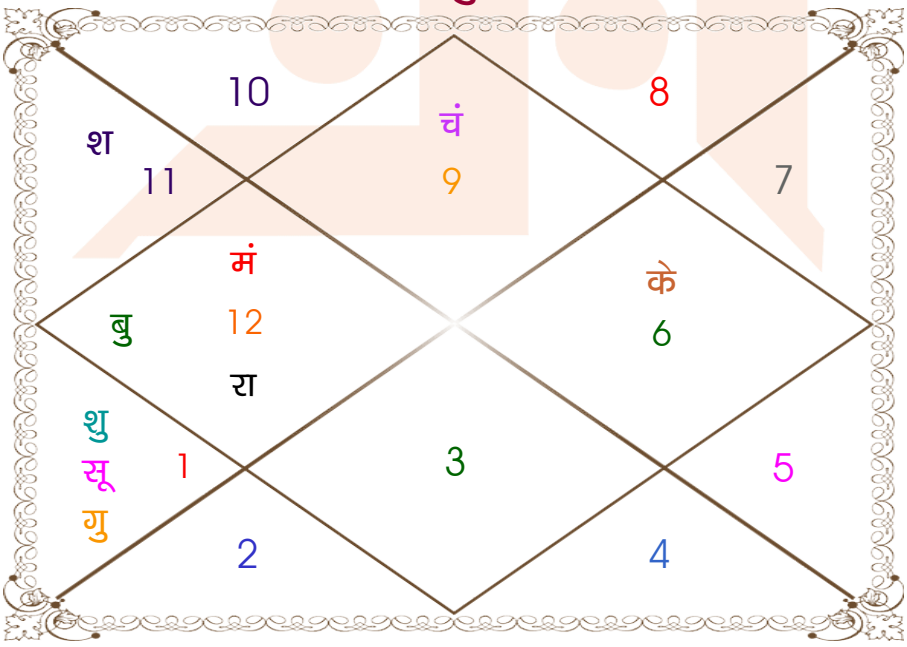

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

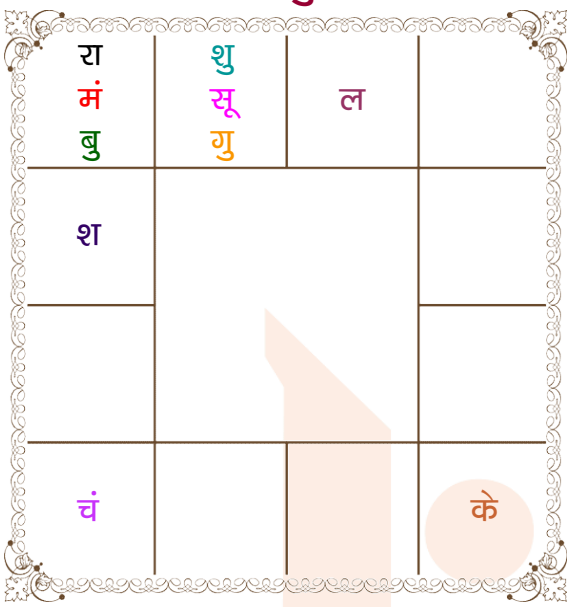

लग्न कुंडली

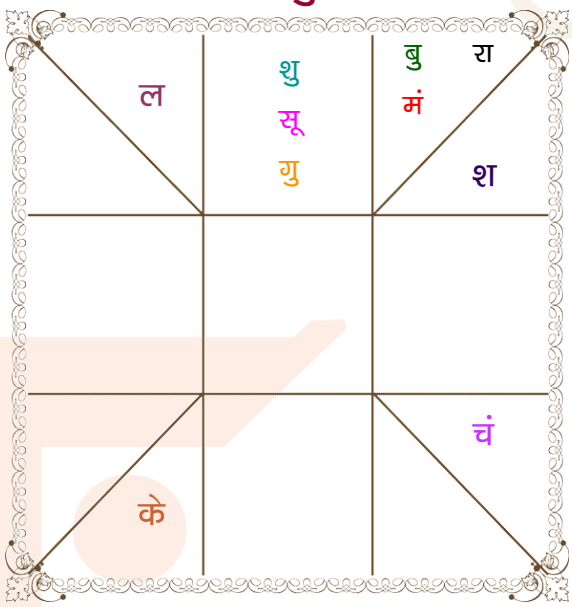

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 5मा 23दि

सूर्य

30/04/2024

24/10/2143

सूर्य	23/10/2029
चन्द्र	23/10/2039
मंगल	23/10/2046
राहु	22/10/2064
गुरु	22/10/2080
शनि	23/10/2099
बुध	23/10/2116
केतु	24/10/2123
शुक्र	24/10/2143

योगिनी
संकटा 7वर्ष 3मा 21दि

संकटा

30/04/2024

21/08/2031

संकटा	31/05/2025
मंगला	21/08/2025
पिंगला	30/01/2026
धान्या	30/09/2026
भ्रामरी	21/08/2027
भद्रिका	30/09/2028
उल्का	30/01/2030
सिद्धा	21/08/2031

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	10:44:51	375:29:48	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	---
सूर्य			मेष	15:59:52	00:58:16	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	उच्च राशि
चंद्र			धनु	27:49:12	13:32:31	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	सम राशि
मंगल			मीन	05:20:43	00:46:16	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	मित्र राशि
बुध			मीन	22:36:37	00:21:31	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	नीच राशि
गुरु			मेष	29:42:21	00:13:59	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	राहु	मित्र राशि
शुक्र		अ	मेष	06:30:34	01:13:56	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	सम राशि
शनि			कुंभ	22:21:32	00:05:18	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	स्वराशि
राहु	व		मीन	21:09:44	00:01:38	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
केतु	व		कन्या	21:09:44	00:01:38	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	28:08:17	00:03:25	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	---
नेप			मीन	04:42:19	00:01:49	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	07:54:24	00:00:05	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मक	26:28:20	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:11:44

लग्न-चलित

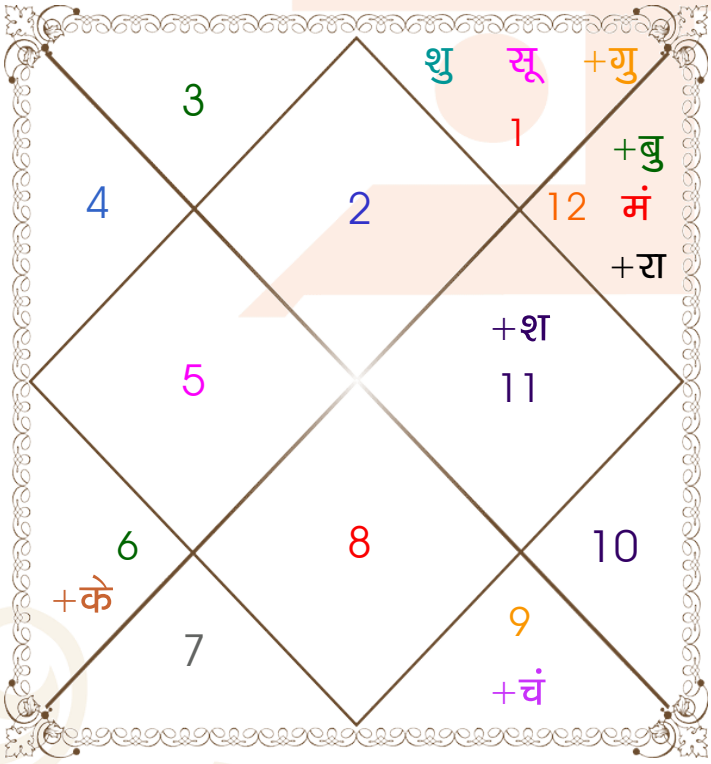

चन्द्र कुंडली

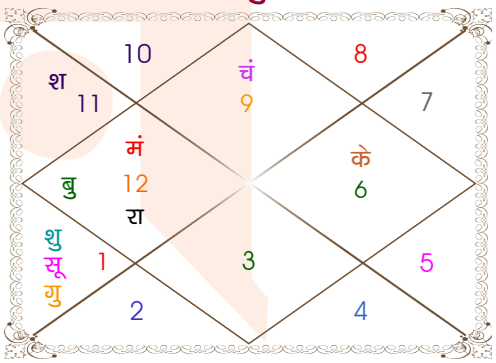

नवमांश कुंडली

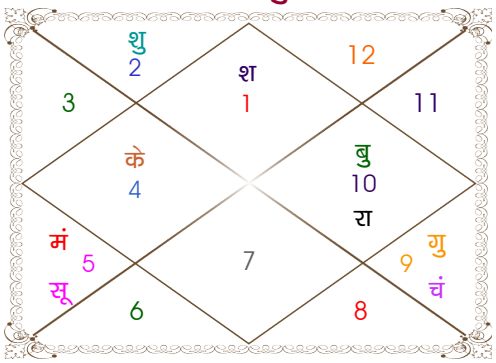

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	23:22:06	वृष	10:44:51
2	वृष	23:22:06	मिथुन	05:59:21
3	मिथुन	18:36:36	कर्क	01:13:50
4	कर्क	13:51:05	कर्क	26:28:20
5	सिंह	13:51:05	कन्या	01:13:50
6	कन्या	18:36:36	तुला	05:59:21
7	तुला	23:22:06	वृश्चिक	10:44:51
8	वृश्चिक	23:22:06	धनु	05:59:21
9	धनु	18:36:36	मकर	01:13:50
10	मकर	13:51:05	मकर	26:28:20
11	कुम्भ	13:51:05	मीन	01:13:50
12	मीन	18:36:36	मेष	05:59:21

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	10:44:51
2	मिथुन	06:16:10
3	कर्क	00:17:04
4	कर्क	26:28:20
5	सिंह	27:43:57
6	तुला	04:10:05
7	वृश्चिक	10:44:51
8	धनु	06:16:10
9	मकर	00:17:04
10	मकर	26:28:20
11	कुम्भ	27:43:57
12	मेष	04:10:05

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

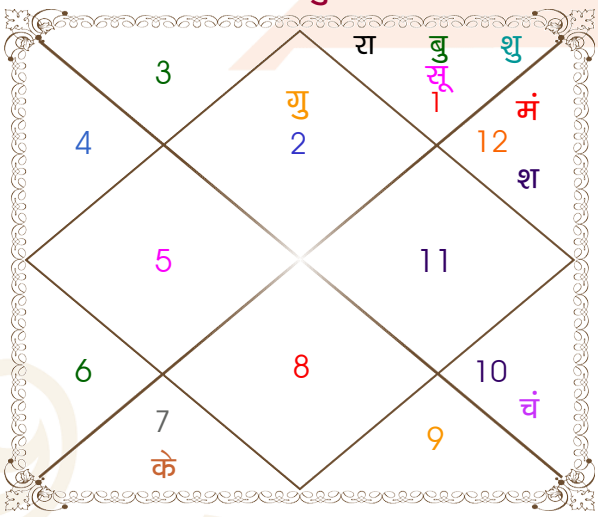

भाव कुंडली

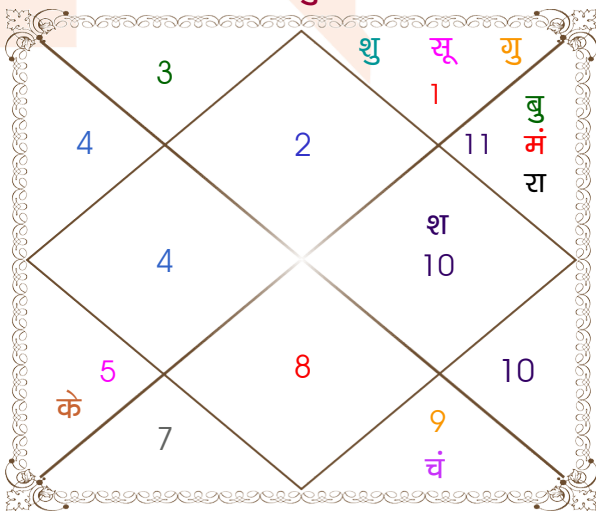

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 5 मास 23 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
30/04/2024		23/10/2029		23/10/2039		23/10/2046		22/10/2064	
23/10/2029		23/10/2039		23/10/2046		22/10/2064		22/10/2080	
	30/04/2024	चंद्र	23/08/2030	मंगल	20/03/2040	राहु	05/07/2049	गुरु	11/12/2066
चंद्र	10/08/2024	मंगल	24/03/2031	राहु	08/04/2041	गुरु	29/11/2051	शनि	23/06/2069
मंगल	16/12/2024	राहु	22/09/2032	गुरु	15/03/2042	शनि	05/10/2054	बुध	29/09/2071
राहु	10/11/2025	गुरु	22/01/2034	शनि	24/04/2043	बुध	23/04/2057	केतु	04/09/2072
गुरु	29/08/2026	शनि	23/08/2035	बुध	20/04/2044	केतु	12/05/2058	शुक्र	06/05/2075
शनि	11/08/2027	बुध	22/01/2037	केतु	16/09/2044	शुक्र	11/05/2061	सूर्य	22/02/2076
बुध	17/06/2028	केतु	23/08/2037	शुक्र	16/11/2045	सूर्य	05/04/2062	चंद्र	23/06/2077
केतु	22/10/2028	शुक्र	24/04/2039	सूर्य	24/03/2046	चंद्र	05/10/2063	मंगल	30/05/2078
शुक्र	23/10/2029	सूर्य	23/10/2039	चंद्र	23/10/2046	मंगल	22/10/2064	राहु	22/10/2080

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
22/10/2080		23/10/2099		23/10/2116		24/10/2123		24/10/2143	
23/10/2099		23/10/2116		24/10/2123		24/10/2143		00/00/0000	
शनि	26/10/2083	बुध	22/03/2102	केतु	22/03/2117	शुक्र	23/02/2127	सूर्य	11/02/2144
बुध	05/07/2086	केतु	19/03/2103	शुक्र	22/05/2118	सूर्य	23/02/2128	चंद्र	01/05/2144
केतु	14/08/2087	शुक्र	17/01/2106	सूर्य	27/09/2118	चंद्र	24/10/2129		00/00/0000
शुक्र	14/10/2090	सूर्य	23/11/2106	चंद्र	28/04/2119	मंगल	24/12/2130		00/00/0000
सूर्य	26/09/2091	चंद्र	24/04/2108	मंगल	24/09/2119	राहु	24/12/2133		00/00/0000
चंद्र	26/04/2093	मंगल	21/04/2109	राहु	11/10/2120	गुरु	24/08/2136		00/00/0000
मंगल	05/06/2094	राहु	08/11/2111	गुरु	17/09/2121	शनि	24/10/2139		00/00/0000
राहु	11/04/2097	गुरु	13/02/2114	शनि	27/10/2122	बुध	24/08/2142		00/00/0000
गुरु	23/10/2099	शनि	23/10/2116	बुध	24/10/2123	केतु	24/10/2143		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 5 मा 22 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
10/11/2025		29/08/2026		11/08/2027		17/06/2028		22/10/2028	
29/08/2026		11/08/2027		17/06/2028		22/10/2028		23/10/2029	
गुरु	19/12/2025	शनि	23/10/2026	बुध	24/09/2027	केतु	24/06/2028	शुक्र	22/12/2028
शनि	03/02/2026	बुध	11/12/2026	केतु	12/10/2027	शुक्र	15/07/2028	सूर्य	10/01/2029
बुध	17/03/2026	केतु	01/01/2027	शुक्र	03/12/2027	सूर्य	22/07/2028	चंद्र	09/02/2029
केतु	03/04/2026	शुक्र	27/02/2027	सूर्य	19/12/2027	चंद्र	01/08/2028	मंगल	02/03/2029
शुक्र	21/05/2026	सूर्य	17/03/2027	चंद्र	13/01/2028	मंगल	09/08/2028	राहु	26/04/2029
सूर्य	05/06/2026	चंद्र	15/04/2027	मंगल	01/02/2028	राहु	28/08/2028	गुरु	14/06/2029
चंद्र	29/06/2026	मंगल	05/05/2027	राहु	18/03/2028	गुरु	14/09/2028	शनि	11/08/2029
मंगल	16/07/2026	राहु	26/06/2027	गुरु	28/04/2028	शनि	04/10/2028	बुध	01/10/2029
राहु	29/08/2026	गुरु	11/08/2027	शनि	17/06/2028	बुध	22/10/2028	केतु	23/10/2029

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
23/10/2029		23/08/2030		24/03/2031		22/09/2032		22/01/2034	
23/08/2030		24/03/2031		22/09/2032		22/01/2034		23/08/2035	
चंद्र	17/11/2029	मंगल	05/09/2030	राहु	14/06/2031	गुरु	26/11/2032	शनि	24/04/2034
मंगल	05/12/2029	राहु	06/10/2030	गुरु	26/08/2031	शनि	11/02/2033	बुध	15/07/2034
राहु	19/01/2030	गुरु	04/11/2030	शनि	21/11/2031	बुध	21/04/2033	केतु	17/08/2034
गुरु	01/03/2030	शनि	08/12/2030	बुध	07/02/2032	केतु	19/05/2033	शुक्र	22/11/2034
शनि	18/04/2030	बुध	07/01/2031	केतु	10/03/2032	शुक्र	09/08/2033	सूर्य	21/12/2034
बुध	31/05/2030	केतु	19/01/2031	शुक्र	09/06/2032	सूर्य	02/09/2033	चंद्र	07/02/2035
केतु	18/06/2030	शुक्र	24/02/2031	सूर्य	06/07/2032	चंद्र	13/10/2033	मंगल	12/03/2035
शुक्र	08/08/2030	सूर्य	06/03/2031	चंद्र	21/08/2032	मंगल	10/11/2033	राहु	07/06/2035
सूर्य	23/08/2030	चंद्र	24/03/2031	मंगल	22/09/2032	राहु	22/01/2034	गुरु	23/08/2035

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
23/08/2035		22/01/2037		23/08/2037		24/04/2039		23/10/2039	
22/01/2037		23/08/2037		24/04/2039		23/10/2039		20/03/2040	
बुध	05/11/2035	केतु	03/02/2037	शुक्र	02/12/2037	सूर्य	03/05/2039	मंगल	01/11/2039
केतु	05/12/2035	शुक्र	11/03/2037	सूर्य	02/01/2038	चंद्र	18/05/2039	राहु	23/11/2039
शुक्र	29/02/2036	सूर्य	21/03/2037	चंद्र	21/02/2038	मंगल	29/05/2039	गुरु	13/12/2039
सूर्य	26/03/2036	चंद्र	08/04/2037	मंगल	29/03/2038	राहु	25/06/2039	शनि	06/01/2040
चंद्र	08/05/2036	मंगल	21/04/2037	राहु	28/06/2038	गुरु	19/07/2039	बुध	27/01/2040
मंगल	07/06/2036	राहु	23/05/2037	गुरु	17/09/2038	शनि	17/08/2039	केतु	05/02/2040
राहु	24/08/2036	गुरु	20/06/2037	शनि	23/12/2038	बुध	12/09/2039	शुक्र	29/02/2040
गुरु	01/11/2036	शनि	24/07/2037	बुध	19/03/2039	केतु	23/09/2039	सूर्य	08/03/2040
शनि	22/01/2037	बुध	23/08/2037	केतु	24/04/2039	शुक्र	23/10/2039	चंद्र	20/03/2040

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 6
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	90%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
पन्ना	बुध	83%	धनार्जन, धन, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	72%	सन्तति सुख, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	56%	कम खर्च, सुख
हीरा	शुक्र	56%	कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	38%	हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	9%	हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि

रत्न की शुभता

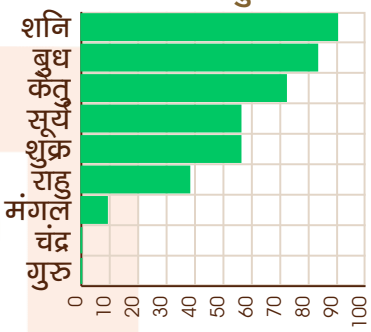

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	23/10/2029	69%	6%	22%	83%	0%	38%	78%	12%	59%
चंद्र	23/10/2039	62%	19%	9%	89%	0%	56%	90%	12%	59%
मंगल	23/10/2046	62%	6%	34%	70%	0%	56%	90%	12%	78%
राहु	22/10/2064	38%	0%	0%	83%	0%	62%	97%	56%	59%
गुरु	22/10/2080	62%	6%	22%	70%	6%	38%	90%	38%	72%
शनि	23/10/2099	38%	0%	0%	89%	0%	62%	100%	50%	59%
बुध	23/10/2116	62%	0%	9%	95%	0%	62%	90%	38%	72%
केतु	24/10/2123	38%	0%	22%	83%	0%	62%	78%	12%	84%
शुक्र	24/10/2143	38%	0%	9%	89%	0%	69%	97%	50%	78%

HEMRITU JYOTISH KENDRA
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है। अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक है। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रूकावटें उत्पन्न होगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे

पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(30/04/2024 - 23/10/2029)

सूर्य की महादशा 30/04/2024 को आरंभ और 23/10/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वादश स्थान में अवस्थित है। सूर्य दर्प, आत्मा, सात्विक स्वभाव तथा का चेतनता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वादश भाव मोक्ष, व्यय, यात्रा तथा धार्मिक विचारों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपकी धर्म के प्रति प्रवृत्ति होगी, आप यात्राओं पर जाएंगे और आपको शक्ति और प्रभुत्व की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। केवल आपकी आँखों को सावधानी की आवश्यकता है। आँख की पीड़ा और कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। अन्यथा आपका स्वास्थ्य और जीवन शक्ति उत्तम होंगे।

अर्थ :

आपका व्यय होगा, किन्तु फलदायी उद्देश्यों के लिये होगा। आपको विदेशी स्रोतों से भी धन की प्राप्ति होगी। षष्ठम भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण शत्रुओं, प्रतिस्पर्धियों और नौक्री से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप दूसरों की सेवा कर उनसे मान्यता प्राप्त करेंगे। कुछ उतार-चढ़ाव की सम्भावना है, किन्तु कुल मिलाकर आप अपनी जीवन वृत्ति में अच्छा करेगे। आपको सरकार तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। विदेश प्रवास अथवा विदेश में जीवन-वृत्ति भी हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों और साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके सम्बन्ध उनके साथ मित्रवत् होंगे। आप इस दशा में अनुबन्ध-पत्र, करारनामा आदि पर हस्ताक्षर कर सकते हैं जिनका संबंध विदेश से हो सकता है। आप सरकारी, पशासनिक आदि कार्यों में सफल होंगे। तकनीकी तथा विज्ञान-सम्बन्धी सेवाएं लाभदायक होंगी। आप रत्नों, सोने, संगमरमर आदि का व्यापार कर सकते हैं। आप आयात निर्यात का व्यापार भी कर सकते हैं जिसमें कुछ यात्राएं होंगी।

परिवार :

कुछ दिनों के लिये आप अपने बच्चों से दूर जा सकते हैं। आपको उनसे सुख आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।, कार्य-क्षेत्र में स्थिति उनके अनुकूल रहेगी, धन की प्राप्ति होगी तथा शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपकी माता के लिये समय भाग्यशाली रहेगा और आपको उनसे धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके पिता की एक अचल सम्पत्ति होगी तथा सुख और धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का जीवन सफल रहेगा और बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ मिलेंगे।

शिक्षा :

योग में आपकी रूचि होगी और आप धार्मिक प्रवचन देंगे या उनका आयोजन करेंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(16/12/2024 - 10/11/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 30/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 16/12/2024 को प्रारंभ होकर 10/11/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको आकांक्षाओं की पूर्ति में विभिन्न व्यक्तियों से सहायता प्राप्त होगी। विदेश के संपर्को से लाभ होगा। आपको धन, सुख-सुविधाएं और आराम नसीब होंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चाधिकारियों से सम्मान मिलेगा।

जीवनसाथी को धन मिलेगा। आपके पिता को सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मठता से प्रयास करने होंगे। माता को स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देना चाहिए। भाई-बहन सौभाग्यशाली रहेंगे। उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त होगी। उनका विवाह हो सकता है। आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। संपर्क बढ़ाने के लिए समय उनके लिए उत्तम है।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे, सब कुछ ठीक ढंग से चलेगा। परामर्शदाताओं के जमा धन में वृद्धि होगी। व्यापारियों की व्यस्तता बढ़ेगी।

शरीर के निचले भागों और बायें कान की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र और सतनजे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(10/11/2025 - 29/08/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 30/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 10/11/2025 को प्रारंभ होकर 29/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपकी कई यात्राएं हो सकती हैं। धन का संचय हो सकता है मगर शुभ कार्यों पर खर्चा भी होगा। धर्म-अध्यात्म में रुचि होगी। बहुत से सराहनीय कार्य करेंगे। सफलता बाधाओं के बाद ही मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; स्वास्थ्य उत्तम होगा। पारिवारिक सुख मिलेगा, माता-पिता से तसल्ली मिलेगी। पिता से कुछ संपत्ति मिल सकती है। वाहन प्राप्त हो सकता है। जायदाद से किराया और आमदनी बढ़ेंगे। नयी जायदाद क्रय कर सकते हैं। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। दानी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है। उनकी विरोधियों पर विजय होगी, कार्य में अच्छे अवसर मिलेंगे, धन का लाभ होगा। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। माता को लाभ होगा, स्वास्थ्य बेहतर होगा, यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। आपकी संतान शोधकार्य में सफल हो सकती है। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। कभी-कभी निराश हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे। परामर्शदाता स्वयं को संगठित करेंगे ; उनकी आय उत्तम रहेगी। व्यापारियों को लाभ अधिक, हानि कम रहेंगे।

नेत्र, कान, जिगर के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि हेतु विष्णुजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(29/08/2026 - 11/08/2027)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 29/08/2026 को प्रारंभ होगी और 11/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको कृषि, खनन आदि से लाभ होगा। उच्चाधिकारियों, मंत्रियों आदि से अच्छे संबंध बना कर रखें, अन्यथा पतन हो सकता है। आपको अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है या वर्तमान जायदाद में सुधार करा सकते हैं। माता के साथ संबंध मधुर होंगे ; उनसे लाभ होगा। स्नायु रोग और अवसाद से बचें।

आपके जीवन साथी के भाग्य में धन संचय, वाहन सुख, प्रसिद्धि, उच्च पद का योग है। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माता का स्वास्थ्य और धनार्जन उत्तम रहेंगे। भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन, यात्रा का संकेत है। आपकी संतान को स्पर्धा का सामना करना पड़ेगा या खेल-कूद में भाग ले सकते हैं। उनको मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

सेवारत या नौकरी के इच्छुक जातकों को रोज़गार मिल सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों, पैरों की मामूली तकलीफ हो सकती है। अरिष्ट से बचने के लिए काली वस्तुओं का दान करने के बाद शनि की आराधना करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(11/08/2027 - 17/06/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 30/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 11/08/2027 को प्रारंभ होकर 17/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ मिलेगा। संतुष्टि, धन और सुख की प्राप्ति होगी। आपको महत्वपूर्ण उपलब्धि हो सकती है। आशाओं और कर्तव्यों की पूर्ति होगी। आपको धन, सम्मान और उच्चाधिकारियों से प्रशंसा की प्राप्ति होगी। सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। ललित कलाओं में रुचि होगी। ज्ञानार्जन द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आपको दक्षता वाले खेल, नाटक और बाल मनोविज्ञान में रुचि हो सकती है। बच्चों से सुख मिलेगा। आप सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। वेदविज्ञान ओर मंत्रसिद्धि में मन लग सकता है।

व्यापार में साझेदार को सट्टेबाजी और निवेश से लाभ हो सकता है। पिता को संचार माध्यम से लाभ होगा। माता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है। भाई-बहनों को यात्रा, घरेलू

सुख और धन के लाभ की संभावना है। आपकी संतान का समय सौभाग्यशाली रहेगा। सेवारत जातकों को अनुबंधों से लाभ होगा, विरोधियों पर सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारियों से सहयोग और उत्तम कार्यालय आदि की संभावना है। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे।

कान, पैर, घुटनों की देखभाल करें। भावनात्मक समस्याओं से बचें। शुभत्व की वृद्धि के लिए हरी वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(17/06/2028 - 22/10/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 30/04/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/06/2028 को आरंभ होकर 22/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और प्रसन्न रहेंगे। आपकी सामान्य स्थान और धर्मस्थलों की यात्राएं होंगी। तंत्र-मंत्र में दिलचस्पी बढ़ेगी। निवेश सोच-समझकर करें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। संतान के कारण कुछ समस्या आ सकती है। आपको धैर्य और नीति का प्रयोग करना होगा। आपको सफलता, प्रोन्नति और भूमि प्राप्ति का संकेत है। सुख-सुविधाएं रहेंगी।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ होगा। पिता को संतान से खुशी मिलेगी; धन और अध्यात्मिक प्रगति का योग है। माता को धन मिलेगा। आपकी संतान की व्यस्तता बढ़ेगीः उन्हें लक्ष्यप्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो तनाव हो सकता है; शत्रुओं पर विजय होगी, कुछ चिंताएं रहेंगी। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों को निवेश से लाभ हो सकता है।

उदर और हृदय के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए धर्मस्थल पर कंबल दान दें और श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(22/10/2028 - 23/10/2029)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप दयालु और धर्मपरायण होंगे। प्राच्यविज्ञा में रुचि होगी। आपके कुछ शत्रु हो सकते हैं मगर आप उन्हें परास्त कर देंगे। आपका जीवन आरामदायक, चिंतामुक्त रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके मातहत और कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे। मामा पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। मुकदमे या विवाद में जीत होगी। कर्ज़ देते वक्त सावधान रहें।

महादशा :– चन्द्र
(23/10/2029 - 23/10/2039)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 23/10/2029 को आरम्भ और 23/10/2039 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। वैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व

सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(23/10/2029 - 23/08/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 23/10/2029 को प्रारंभ होकर 23/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/10/2029 को प्रारंभ होकर 23/08/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव को अशुभ समझा जाता है। अष्टम में चंद्र की स्थिति बहुत अशुभ मानी जाती है, परंतु चंद्र के बल के कम-अधिक होने का भी प्रभाव होता है।

आपको इस अवधि में समाज में सफलता मिलेगी। विवाह द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है। जल से संबंधित व्याधिओं से सावधान रहें। नदी, तालाब आदि के निकट सावधान रहें ओर डूबने से बचें। गंभीर बीमारियों से बचाव भी आवश्यक है। अगर कोई रोग होता है तो प्रारंभिक अवस्था में ही उसका निदान करा लें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के यंत्र को धारण करें।